मानव सेवा — मानव सेवा को समर्पित — धर्म हमारा

भाई कन्हैया मानव सेवा ट्रस्ट (रजि.)

द्वारा संचालित

बेसहारा, मंदबुद्धि बच्चों, औरतों, पुरूषों व बुजुर्गों का
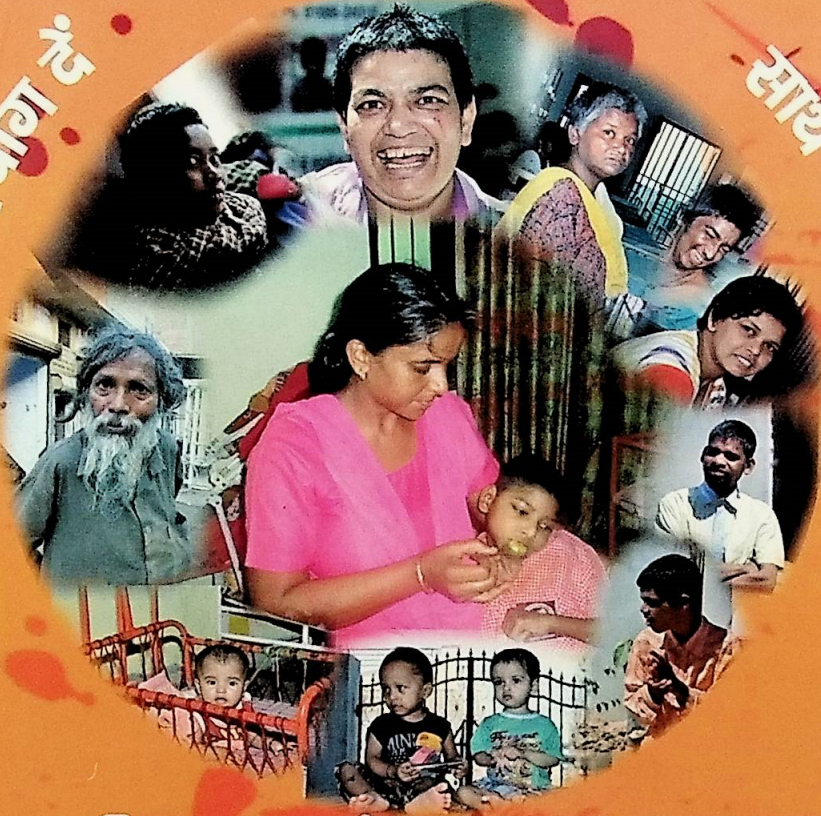
सहयोग दें — साथ चलें

भाई कन्हैया आश्रम

(PVR के सामने, गांव मोरीवाला) व (पोलिटैक्निक गर्ल्ज कॉलेज के पीछे) सिरसा

01666-250102 (P), 92541-40105 (M)   01666-240183 (P), 92541-40106 (M)

SBI Bank A/c No.: 00000035828838975
IFSC Code : SBIN0014635

www.bkmstrust.org
E-mail: manavsewabhaikaniyha@gmail.com
https://web.facebook.com/BhaiKaniyhaManavSevaTrustSirsa

हेड ऑफिस : माल गोदाम रोड़, सिरसा (हरियाणा) 01666-220102 (P), 92541-40102 (M)
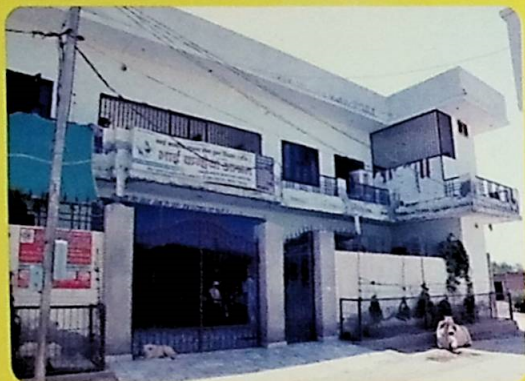
आश्रम में रह रहें परमात्मा स्वरूप प्राणी
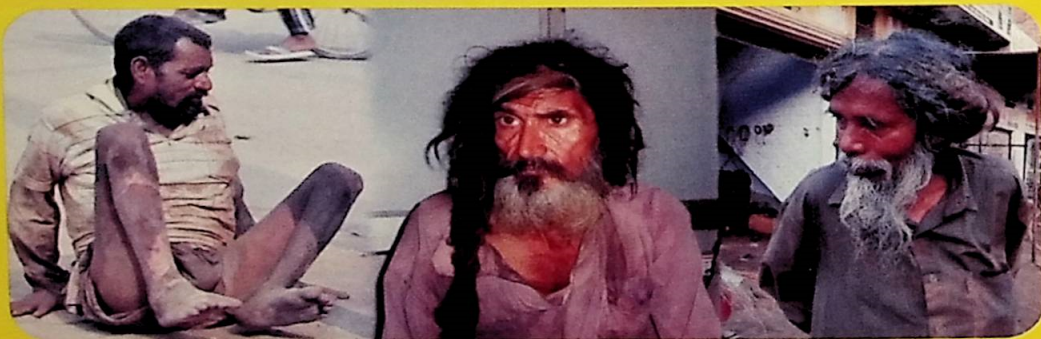
मानवता के सच्चे सेवक- भाई कन्हैया जी

मानवता के सच्चे सेवक भाई कन्हैया जी का जन्म 1648 ई. को गांव सहोदरा जिला शाहकोट नजदीक वजीराबाद में हुआ। उनके पिता का नाम भाई नत्थू राम जी व माता का नाम सुन्दरी था। उनके पिता जी गांव के अमीर आदमी थे। उनके सुन्दर चेहरे को देखकर भगवान कृष्ण के नाम पर कन्हैया रखा गया । बचपन से ही उनमें बहुत सेवा का भाव था। कुछ बड़े हुए तो जिस मजदूर को ज्यादा वजन उठाए देखते, उसका आधा वजन ले लते, उसे गांव पार करवा कर ही वापस आते। जवानी में वे भाई नानु की के सम्पर्क में आए, उनके साथ रह कर गुरवाणी व गुरूधर से जड़ गए। राहगीरों को पानी पिलाना, संगत की सेवा करना,सारा दिन उनका इसी तरह के कामों में गुजरता था। सन् 1674 में भाई कन्हैया जी ने पहली बार गुरू तेग बहादुर जी के दर्शन किये व उनकी सेवा में लग गए। जब गुरू तेग बहादुर जी दिल्ली शहादत के लिए गए तो भाई कन्हैया जी को काहवा गांव जिला काम्बलापुरा (पाकिस्तान) जाने को कहा व वहां सेवा करने को कहा। वहां भाई कन्हैया जी ने एक धर्मशाला बनवाई व राहगीरों के लिए कुएं खुदवाएं।

1678 में उन्होनें पहली बार गुरू गोबिन्द जी के दर्शन किए। 1702 में जब मुगल फौज व गुरू गोबिन्द जी की फौज में आंनदपुर साहिब में आमने सामने की लड़ाई हुई तो भाई कन्हैया जी को घायल सैनिकों को पानी पिलाने की सेवा मिली। भाई कन्हैया जी सारा दिन कमर में मश्क बांध कर घायलों को पानी पिलाते।

एक दिन मुगल सेना का सेनापति घायलों मे पड़ा था। उसने पानी माँगा तो भाई कन्हैया जी ने उसे पानी पिलाया, क्योंकि वे सभी को पानी पिलाते थे। इस बात की शिकायत सिक्खों ने गुरू गोबिन्द जी से की । गुरू जी ने भाई कन्हैया को बुलाया व सिक्खों के सामने उनके बारे में जो शिकायत आई थी उसके बारे में बताया। सुनकर भाई कन्हैया ने कहा कि गुरू जी मुझे तो हिन्दु, मुस्लमान या सिक्खों में कोई फर्क नहीं दिखता। मुझे तो हर किसी में आप ही का रूप दिखता है। जब भी मैं किसी को पानी पिलाता हूँ उसमें मुझे परमेश्वर दिखाई देता है * ना को बैरी ना हि बिगाना सगल संग हमको बन आई * इतनी बात सुनकर गुरू गोबिन्द सिंह जी ने भाई कन्हैया जी को अपने गले लगाया व मलहम की डब्बी भी दे दी और कहां कि तुम सच्चे सेवक हो। आज के बाद जिस घायल को पानी पिलाओ उसे मलहम पट्टी भी लगा देना। उस के बाद भाई कन्हैया जब तक लड़ाई चली घायलों को पानी पिलाते रहे व मलहम पट्टी करते रहे । लड़ाई खत्म होने के बाद वे अपने पैतृक गांव आ गए। जब तक जीवित रहे धर्मशालाओं का निर्माण करते रहे व राहगीरों की, गरीबों की, घायलों की सेवा करते रहे। 1718 में वे ज्योति जौत समा गए। ज्योति जौत समाने से पहले उन्होनें सेवा पंथी के नाम से एक सिक्खों की शाखा बनाई। आज भी इस पंथ के अनुयायी पूरे देश में है। वे अपना जीवन जन-सेवा को समर्पित करते है व भाई कन्हैया जी के पद चिन्हों पर चलने का प्रयास करते है।

"भाई कन्हैया मानव सेवा ट्रस्ट" की शुरूआत

7 जून 1997 को मेरा एक्सीडेंट हो गया इलाज के लिए लुधियाना डी.एम.सी. मे रेफर किया गया। वहाँ एक संस्था हस्पताल में दूध, ब्रेड, दातुन सभी मरीजों को बाटंती है उसे देख कर मन में यही सेवा सिरसा में शुरू करने का मन बना।तीन चार साल अलग-अलग हस्पतालों में इलाज चलता रहा। दिस्मंबर 2004 को चाचा जी (हरबंस लाल जिंदल) के प्रतिष्ठान के सामने एक बुजुर्ग लाचार व्यक्ति लेटा हुआ था। चाचा जी ने मुझे कहा कि इसे हस्पताल पहुंचा दे उसे हस्पताल पहुंचा दिया।वह बोल नहीं पाया लेकिन उस की आँखों में धन्यावाद के आँसू थे उसी दिन डी.एम.सी. वाला संकल्प याद आ गया शाम को मित्रो को (ऋषिपाल जिन्दल,हरबंस लाल जिंदल, रजिंव गर्ग, सुधीर मरोदिया, गुरमीत सिंह कूका) को बुला कर सेवा शुरू करने का आग्रह किया सभी ने सहर्ष स्वीकार किया । जनवरी 2005 से सामान्य हस्पताल में रात्री दूध सेवा से भाई कन्हैया मानव सेवा ट्रस्ट की शुरु आत हुई इसके बाद धीरे

धीरे रक्तदान शिविर, श्रवण वाणी विकलांग केन्द में रात्रि दूध सेवा , निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा, जल सेवा की शुरूआत हो गई।

दिसम्बर 2010 को ट्रस्ट के हैड आफिस मालगोदाम रोड के आगे एक औरत विक्षिप्त हालात में घूम रही थी उसे पिंगलवाड़ा अमृतसर भेजने का मन हुआ।गुरमीत सिंह जी (प्रतिनिधि पिंगलवाड़ा) से मिल कर औरत को पिंगलवाडा भेज दिया।कुछ दिनों बाद पिंगलवाड़ा देखने साथियों के साथ गए। वहाँ सेवा को ही धर्म मानने वाली डॉ. बीबी इन्द्रजीत कौर के दर्शन हुए व पिंगलवाड़ा देखा वहां से सिरसा में भी ऐसा ही आश्रम बनाने का संकल्प ले कर वापिस आए।ट्रस्ट से जुड़े हुए सेवा भावी सज्जन गुरशरण सिंह कालडा जी से जब इस बारे में बात हुई तो उन्होनें तुरंत पोल्टैनिक्लस गर्ल्ज कॉलेज के पिछे 200 गज का प्लाट आश्रम के लिए सेवा में दे दिया 400 गज मौल ली गई व 6 मार्च 2011 को एक सादे समारोह में डॉ. बीबी इन्द्रजीत कौर के सेवामयी हाथों से भाई कन्हैया आश्रम का नींव पत्थर रखवाकर निर्माण कार्य की शुरूआत की गई व अक्तूबर 2011 में पहली मन्दबुद्धि औरत को आश्रम में लाया गया। धीरे-धीरे आश्रम में औरतों व बच्चों की संख्या बढती गयी 2014 में सभी प्राणीयों की संख्या 80 के पार हो गयी।

धीरे-धीरे मंदबुद्धि लावारिस पुरूषों के आश्रम की जरूरत महसूस होने लगी। इन सब बातों को देखते हुए हिसार रोड़ पर **PVR** के सामने एक एकड़ जगह मोल ली गई व 17 मई 2015 को गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में श्री अश्विन शैणवी जी ने अपने शुभ हाथों से आश्रम की नींव रखी व 20 मार्च 2016 को श्री कुलभूषण सरावगी जी द्वारा अपने माता-पिता की याद में बनवाए गए सरावगी सदन का शुभ आरम्भ श्री वी. उमा शंकर जी (सह सचिव राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद) ने श्री जे. गणेशन (उपायुक्त करनाल), श्रीमति शरणदीप कौर बराड़ (उपायुक्त सिरसा), श्री अश्विन शैणवी (पुलिस अधीक्षक सिरसा), श्री कुलभूषण सरावगी समाज सेवी (सरावगी बिल्डर्स,गुड़गांव), श्री राजीव जैन (चेयरमैन, सुखबीर सिंह जैन मेमोरियल ट्रस्ट) की उपस्थिति में किया।

इस मौके पर शहर के सभी इन्सानियत से प्रेम करने वाले सेवाभावी गणमान्य सज्जन उपस्थित थे। अब आश्रम में मंदबुद्धि बच्चों, औरतों, पुरूषों व बुजुर्गों के रहने का प्रबन्ध हो गया है। यह सभी सेवाएं मानवता को प्यार करने वाले सज्जनों के सहयोग से ही संभव हो सकी हैं। सभी दानी सज्जनों ने दिल खोल कर साथ दिया। उन सब का भाई कन्हैया मानव सेवा ट्रस्ट की तरफ से बहुत-बहुत धन्यवाद और उम्मीद करते है कि आप सबका सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा। हर उस शख्स का धन्यवाद जिसने कभी ट्रस्ट के कार्यों के बारे किसी के सामने जिक्र भी किया हो। दोस्तों, अपने लिए तो पशु भी जीते है चिड़िया भी अपने बच्चों के मुँह में दाना डालती है, इन्सान तो वह है जो दूसरों के लिए जिये।

अंत में यही कहूंगा कि इन्सान गल्तियों का पुतला है, यदि ट्रस्ट की ओर से कभी किसी को ठेस पहुँची हो तो मैं हाथ जोड़ कर आप से माफी चाहता हूँ। उम्मीद है आप लोग सदा इसी तरह ट्रस्ट का सहयोग करते रहेंगे और मानव सेवा के इस पावन मिशन को नई बुलंदियों को छूने में हमारी सहायता करते रहेंगे।

गुरविन्द्र सिंह
मुख्य सेवादार

12–2–2015 को एक मंदबुद्धि महिला सिरसा जिला के गांव मोरीवाला में लावारिस विक्षिप्त हालात में घूम रही थी। मोरीवाला गांव के लोगों ने इसकी सूचना भाई कन्हैया आश्रम के सेवादार श्री गुरमीत सिंह जी को दी। श्री गुरमीत सिंह जी ने तुरंत डिंग थाना पुलिस से सम्पर्क करके हनुमान प्रसाद सब इंसपैक्टर को साथ लेकर कानूनी कार्यवाही करने के बाद मेडिकल करवाकर भाई कन्हैया आश्रम में भेज दिया। आश्रम में महिला सेवादारों ने औरत को नहलाया धुलाया व अगले दिन डॉ. अमित नारंग जी से इसका ईलाज शुरू करवाया गया। समय पर खाना–पीना व इलाज से औरत की हालत में तेजी से सुधार होना शुरू हो गया। लगभग तीन महीने बाद औरत बिल्कुल ठीक हो गई। उसने अपना नाम वेदा बताया उसकी भाषा से लगता था कि वह दक्षिण भारत की रहने वाली है। वह आश्रम में बहुत अच्छे तरीके से रहने लगी । लेकिन दिन में एक या दो बार संदीप–संदीप बोलकर जोर–जोर से रोने लगती थी। भाषा की समस्या के कारण उसकी बात आश्रम के सेवादारों को समझ नही आती थी। एक दिन सेवादार गुरविन्द्र सिंह के ध्यान में आया कि श्री अश्विन शैणवी जी एस.पी. सिरसा जो कि आश्रम के साथ जुड़ें हुए है वह मूल रूप से कर्नाटक के रहने वाले है और आश्रम में आते रहते है। उनसे सम्पर्क करके महिला के बारे में बात की। उन्होनें उसी बक्त अपने दफतर में बुलाया व औरत से कन्नड़ में बात करके उसका पूरा पता आश्रम सेवादारों को बताया। वेदा के भाई का नाम मुन्नीराज है और वह कौलार (कर्नाटक) के रहने वाले है। जब उनसे टेलिफोन पर सम्पर्क किया गया तो उन्होनें अपनी बहन होने से इन्कार किया और उन्होनें कहा की उनकी बहन कि दो साल पहले ही मृत्यु हो चुकी है जिसका अंतिम संस्कार उन्होनें अपने हाथों से किया है। तो वेदा के भाई की बात वेदा से करवाई गई तो उनकी खुशी व हैरानी का ठिकाना न रहा और तुरंत बैंगलोर से हवाई जहाज से अगले दिन ही दिल्ली व दिल्ली से सिरसा पहुंचे ।भाई बहन मिलकर खुशी से भावुक हो गए व उनकी आंखों से खुशी के आंसु रूकने का नाम नहीं ले रहे थे। वेदा के भाई ने बताया कि लगभग दो साल पहले वेदा मानसिक रूप से परेशान थी तो उसका पति उसको गांव में किसी तांत्रिक के पास ले गया जिसने गर्म–गर्म सलाखें उसकी दोनों बाजुओं पर लगाई। दर्द से तड़फ कर वेदा वहां से अपने आप को छुडवा कर भागी और गुम हो गई हमनें उसकी काफी तलाश की और कर्नाटक की पुलिस में इसकी सुचना भी दी। लेकिन कई दिनों तक वेदा के बारे में कुछ भी पता नहीं चला। परंतु एक दिन कर्नाटक पुलिस को एक महिला का शव मिला। तब पुलिस ने गुमशुदा महिलाओं की सूची जांच की ओर उन्होनें हमें बुलाया। जब हमने लाश देखी तो हम भी उसे पहचान नहीं पाए लेकिन इसे भगवान की मंजूरी समझ हमने अपनी बहन को मरा हुआ मान लिया और उस लाश को घर ले जाकर उसका अंतिम संस्कार कर दिया। उसने बताया कि जब आश्रम के लोगों ने वहां की पुलिस से बातचीत की तो पुलिस वाले हमारे घर आए और कहा कि हमारी बहन जिंदा है पर हमने इस पर विश्वास नहीं किया और पुलिस वालों को वापिस भेज दिया। लेकिन पुलिस वाले फिर घर आए लेकिन हमने फिर भी विश्वास नहीं किया। लेकिन जब पुलिस वालों ने जोर दिया और कहा कि अपनी बहन से बात करलो तो हमने वेदा से फोन पर बात की और तब जाकर हमें विश्वास हुआ कि हमारी बहन जिंदा है और हम तुरंत हवाई जहाज से दिल्ली होते हुए सिरसा आए और आज अपनी बहन को जिंदा पाकर हमें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा है।

आश्रम में आने से पहले

आश्रम में आने के बाद

यह तो केवल एक वेदा की बात है। ऐसी अनेकों वेदा आपके सहयोग व हमारे प्रयास से अपने परिजनों से मिल चुकी है। यह दिल को छूने वाली मार्मिक दर्दभरी गाथा है। अंत में आपसे निवेदन है कि बेसहारा लोगों का सहारा बनकर उनके मुरझाए चेहरों पर खुशियां लाने में भाई कन्हैया मानव सेवा ट्रस्ट का सहयोग करें।

इसके अलावा 65 महिलाओं व 4 पुरूषों को आपके सहयोग व आश्रम के प्रयासों से उनके परिजनों से मिलवाया गया ।

07–07–15 को आश्रम में फोन आया कि अम्बेडकर चौक फलाईओवर सिरसा के पास एक मंदबुद्धि विकलांग रेंग कर चल रहा है। सेवादार तुरंत वहां पहुँचे लेकिन वहां सब तरफ देखने के बाद कोई नही मिला । दो दिन बाद फिर फोन आया उसी व्यक्ति के लिए ट्रस्ट के मुख्य सेवादार श्री गुरविन्द्र सिंह जी तुरंत वहां पहुँचे तो काफी ढुंढने के बाद फलाईओवर के नीचे कूडे के ढेर में एक व्यक्ति विक्षिप्त हालत में मिला । उसको बाहर बुलाया तो पैरो को घसीटते हुए बाहर आया। उसकी एक टांग पर काफी जख्म थे जिसकी वजह से उसे घसीट कर चलने में भी दर्द हो रहा था । उसने अपना नाम महादेव बताया उसे एम्बुलेंस द्वारा आश्रम ले गए। वहां जाकर उसको नहलाया–धुलाया गया अगले दिन डॉ. राजकुमार दूमडा (आर्थो) से महादेव की टांग का इलाज शुरू करवाया गया। समय पर खाना पीना व इलाज से महादेव की हालत में तेजी से सुधार होना शुरू हो गया। और लगभग दो महीने बाद जख्म ठीक होने के बाद महादेव सहारे से अपने पैरो पर खड़ा हो गया व धीरे–धीरे चलने लगा । तीन–चार महीने बाद, अब महादेव बिल्कुल तंदरूस्त है। वह अपना घर लातूर (महाराष्ट) बता रहा है वहां उसका पूरा परिवार है जो उसके आने की उम्मीद छोड़ चूका होगा। अब महादेव को घर भेजने की तैयारी है।

ऐसे सैकड़ों महादेव हमारे देश में सड़को पर बिना इलाज के तड़प–तड़प कर नरकमयी जिन्दगी जीने को मजबूर है आईए इन्हें नरकमयी जिन्दगी से निकाल कर अपने परिवार से मिलाने का प्रयास करे। आप हमारा साथ दें। आपका साथ हमें हिम्मत देगा।

भाई कन्हैया मानव सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित सेवाएं :-

1. सेवा की शुरूआत :- 1 जनवरी 2005 को सामान्य अस्पताल में रात्रि से दूध सेवा की गई।
2. 28 सितम्बर 2006 को आर.के.जे. श्रवण वाणी विकलांग केंद्र में बच्चों को रात्रि दूध सेवा व इन्वर्टर सेवा की शुरूआत। निरंतर जारी।
3. 13 अगस्त 2006 से रक्तदान शिविर की शुरूआत की गई। आज तक 28 सफल रक्तदान शिविर आयोजित किए जा चुके है।
4. 25 जुलाई 2008 को निःशुल्क आपातकालीन एम्बुलेंस सेवा का शुभारंभ श्री पवन डिंगवाला (तत्कालीन प्रधान नगर परिषद) द्वारा किया गया । आज तक 1637 घायलों व 521 प्रसव पीड़ित महिलाओं को निःशुल्क अस्पताल पहुंचाया गया।
5. शहर के बीचों-बीच भाई कन्हैया पार्क में **15X35** का शेड प्रशासन की तरफ से श्री वी.उमाशंकर (तत्कालीन उपायुक्त) द्वारा श्री पवन डिंगवाला (तत्कालीन प्रधान नगर परिषद) की अध्यक्षता में ट्रस्ट को समर्पित हुआ।
6. 8 मार्च 2011 को भाई कन्हैया आश्रम (पॉलिटैक्निक गर्ल्ज कॉलेज के पीछे) का नींव पत्थर बीबी इन्द्रजीत कौर (चेयरपर्सन ऑल इण्डिया पिंगलवाडा चैरिटेबल सोसायटी) अमृतसर ने रखा।
7. 8 जनवरी 2012 को भाई कन्हैया आश्रम (मंदबुद्धि, लावारिस, महिलाओं के लिए) सिरसा का शिलान्यास बीबी इन्द्रजीत कौर ने तत्कालीन पुलिस अधीक्षक देवेंद्र यादव तथा तत्कालीन अतिरिक्त उपायुक्त श्री डी.के. बेहरा की उपस्थिति में किया।
8. 3 जनवरी 2014 ऐलनाबाद में एम्बुलेंस सेवा की शुरूआत सिरसा के तत्कालीन उपायुक्त डा. जे. गणेशन द्वारा की गई।
9. 17 मई 2015 को भाई कन्हैया आश्रम (मंदबुद्धि, लावारिस, बच्चों, महिलाओं, पुरूषों व बुजुर्गो के लिए) मोरीवाला का नींव पत्थर श्री अश्विन शैणवी (तत्कालीन पुलिस अधिक्षक सिरसा) ने अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में रखा।
10. 20 मार्च 2016 को भाई कन्हैया आश्रम मोरीवाला का शुभारंभ श्री वी. उमाशंकर (सहसचिव राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद) ने डा.जे. गणेशन उपायुक्त करनाल, शरणदीप कौर बराड़ उपायुक्त सिरसा तथा श्री अश्विन शैणवी पुलिस अधीक्षक हिसार की उपस्थिति में किया।

आज तक भाई कन्हैया आश्रम में 208 बेसहारा बच्चों, महिलाओं व पुरूषों ने आसरा लिया। आश्रम में 4 बच्चों ने जन्म लिया व 8 औरतों ,2 पुरूषों व एक नवजात बच्ची की मृत्यु हुई जिनका क्रिया क्रम उनके धर्म अनुसार किया गया। इनमें से 70 प्राणी अपने परिजनों के पास पहुच गए है।

नीचा अन्दर नीच जात नीची हूँ अति नीच नानक तिन के संग-साथ
बड़िया सौं क्या रीस जिथे नीच समालिए तिथे नदर तेरी बख्शीश

-गुरु नानक देव जी

ईश्वर की सर्वव्यापका का अर्थ है - यह सारी दुनियां,
तथा उसकी पूजा का अर्थ है - लोगों की सेवा करना।
न कि व्यर्थ के कर्मकाण्डों में उलझे रहना ।

- स्वामी विवेकानन्द जी

मै ऐसे धर्म को व्यर्थ मानता हूं जो, किसी मासूम गरीब के
मुंह में रोटी ना डाल सके व किसी विधवा के आंसू न पोंछ सके।

- स्वामी विवेकानन्द जी

परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
परपीड़ा सम नहीं अधमाई

-तुलसीदास जी

मेरी सेवा करनी है तो किसी रोगी की सेवा कर लो।
मैं इन्सानियत में बसता हूँ, और लोग मुझे मजहबों में ढूंढते है

-महात्मा बुद्ध जी

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान,
तुलसी दया ना छाड़िए जब तक घट में प्राण।
-तुलसीदास जी

तुलसी इस संसार में सबसे मिलियो धाई।
न जाने केहि रूप में नारायण मिल जाई
- तुलसीदास जी

हे प्रभु! तेरा स्थान वहीं है तथा वहीं तेरे चरण टिकते हैं
जहां सबसे निर्धन, नीच व दुखों के मारे लोग रहते हैं।
-रवीन्द्रनाथ टैगोर जी

जरूरी नही कि जिनमें सांसें नही वो ही मुर्दा है,
जिनमें इन्सानियत नही है वो भी तो मुर्दा ही है।

मदद करने के लिए केवल धन की जरूरत नही होती,
इसके लिए पवित्र मन की जरूरत होती है।

माँ-बाप की सेवा, सेवा ही नही, हर इन्सान का फर्ज है।

वो हाथ सदा पवित्र होते है
जो प्रार्थना से ज्यादा सेवा के लिए उठते है।

सेवादार

भाई कन्हैया आश्रम
(पॉलटैक्निक गर्ल्ज कॉलेज के पीछे)

1. रजीव गर्ग 94160-29493
2. हरबंस लाल जिंदल 94164-13741
3. भूप सिंह सोनी 94162-84861
4. बलराज सिंह बाजवा 94166-20290
5. गुरशरण सिंह 89292-00001
6. अवनिश कालड़ा 93153-21324
7. मा. निछत्र सिंह 94161-36628
8. राजेश बजाज 94168-00500
9. अर्जुन शर्मा 94163-25400
10. कृष्ण सिंगला 98131-00217
11. जसप्रीत सिंह 94167-56656
12. प्रेम सिंगला 85292-00009
13. मुकेश मित्तल 92556-60020
14. संदीप गोगीया 80539-20700

भाई कन्हैया आश्रम
(PVR के सामने मोरीवाला)

1. ऋषिपाल जिंदल 92151-21821
2. संजीव जैन 92152-20094
3. हरदेव सिंह 98963-41838
4. मेघनाथ शर्मा 94162-53444
5. संजय सिंगल 92159-70600
6. गुरमीत सिंह 94163-05221
7. अनिल सोनी 98110-55411
8. कर्ण चावला 94676-86661
9. प्रीतम सिंह 94163-08483
10. नरेश गोयल 92552-29551
11. मनी जैन 98121-60835
12. विरेन्द्र गुप्ता 98963-30233
13. प्रदीप मित्तल 98121-71221
14. सुखदेव सिंह 93555-72868

भाई कन्हैया आश्रम (ऐलनाबाद)

1. मा. नसीब सिंह 94662-40102
2. स. रजवंत सिंह 94164-40478
3. विजय गुप्ता 92534-06666
4. जसबीर सिंह 94163-51820
5. राजेश कुमार 94160-46473
6. मंदर सिंह 94169-21354
6. मंदर सिंह 94169-21354
7. सुरजीत सिंह 94162-62768
8. पवन कानसरिया 92150-20662
9. हरदेव सिंह 94164-40148
10. रमेश कम्बोज 94161-15206
11. परमजीत सिंह 94161-06159

यादगार क्षण

डॉ. बीबी इन्द्रजीत कौर (चेयर पर्सन पिंगलवाड़ा, अमृतसर)
भाई कन्हैया आश्रम का शुभारम्भ करते हुए।

डॉ. एस.पी. सिंह ओबरॉय (चेयरमेन सरबत दा भला चेरीटेबल ट्रस्ट)
भाई कन्हैया आश्रम का अवलोकन करते हुए।

25 IAS, IPS,IFS अधिकारी डॉ.जे.गणेशन (तत्कालिन उपायुक्त सिरसा)
के साथ भाई कन्हैया आश्रम में

श्री अश्विन शैणवी (तत्कालिन पुलिस अधीक्षक सिरसा)
भाई कन्हैया आश्रम (मोरीवाला) का नीवं पत्थर रखते हुए
श्री जगदीश चौपड़ा राजनितिक सलाहकार मुख्यमंत्री हरियाणा
व गणमान्य सज्जनों की उपस्थिति में

श्री वी. उमाशंकर (सह सचिव राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद) व डॉ. जे. गणेशन (तत्कालिन उपायुक्त करनाल)
भाई कन्हैया आश्रम, मोरीवाला का शुभारंभ करते हुए।

श्री कुलभुषण सरावगी (प्रमुख समाज सेवी व उद्योगपति)
सरावगी सदन भाई कन्हैया आश्रम को समर्पित करते हुए।
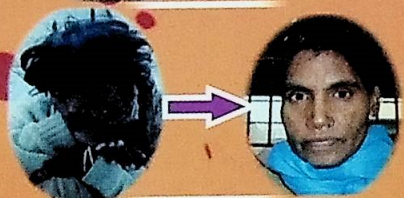
भाई कन्हैया आश्रम में 150 निसहाय प्राणी रह रहें है आप से विनम्र विनती है कि जहां कही भी असहाय प्राणी जिसको सेवा की जरूरत हो कृपया उसे आश्रम में पहुचाएं। ताकि इनकी सेवा हो सके । ट्रस्ट का मासिक खर्च 4 लाख रूपये है जो कि आप जैसे सेवाभावी सज्जनों के सहयोग से ही संभव हो रहा है। सहयोग किसी भी रूप में दिया जा सकता है। जैसे खाद्य सामग्री, दवाईयां मासिक सदस्य बनकर अथवा ट्रस्ट के बैंक अकाऊंट में जमा करवाकर 01666-220102 पर सूचित करें ताकि रसीद आप तक पहुंचाई जा सके।

आप भोजन प्रसाद की सेवा अपने हाथ से भी कर सकते है।

एक आश्रम की

चाय की सेवा	500 रूपये
नाश्ते की सेवा	1100 रूपये
दोपहर या रात्रि के भोजन की सेवा	2100 रूपये
दोपहर या रात्रि के विशेष भोजन की सेवा	3100 रूपये
पूरे दिन के भोजन की सेवा	5100 रूपये
दोनों आश्रमों का पूरे दिन का भोजन	11000 रूपये

A/c Name-Bhai Kanhaiya Manav Seva Trust

SBI Bank A/c No.: 00000035828838975 IFSC Code : SBIN0014635

ट्रस्ट को दिया दान धारा 80 G के तहत कर मुक्त है